



बालिकाओं की शिक्षा का विशेष अध्ययन:-

डॉ. श्वेता सिंह

(एम.फिल , पी.एच. डी. शिक्षाशास्त्र)

प्रस्तावना:-

शिक्षा मानव की एक मूलभूत आवश्यकता है जो उसके बौद्धिक विकास, समाज के, गांव के, जिले के, प्रदेश के और देश के आर्थिक, राजनीतिक एवं औद्योगिक विकास में सहायक होती है शायद इसीलिए यह कहा जा सकता है कि शिक्षा वर्तमान और भविष्य के लिए अद्भुत निवेश है।

लाक का मत है:- " पौधों का विकास कृषि द्वारा एवं मनुष्य का विकास शिक्षा द्वारा होता है।" बालक जन्म के समय असहाय एवं अबोध होता है।

अरस्तू के अनुसार:- " मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, शिक्षा के अभाव में मानव जीवन की कल्पना करना असम्भव है।" आज देश में लोकतंत्र के विकास के लिए सर्वाधिक आवश्यकता शिक्षित स्त्रियों की है मनुष्य की जन्म जाति शक्तियों के स्वाभाविक और सामंजस्यपूर्ण विकास में सहयोग देती है। उसकी वैयक्तिकता का पूर्ण विकास करती है, उसे अपने वातावरण से सामंजस्य स्थापित करने में सहायक है, उसे नागरिकता के कर्तव्यों और दायित्वों के लिए तैयार करती है और उसके व्यवहार, विचार एवं दृष्टिकोण में ऐसा परिवर्तन करती है जो समाज देश और विश्व के लिए हितकर होता है। बालिका शिक्षा का महत्व:-

आज की भाग दौड़ की जिंदगी में शिक्षित होना बहुत आवश्यक है। जितना हमारे लिए खाना जरूरी है उतना ही शिक्षित होना। अशिक्षित होने की वजह से आज के समय में सभी काम अधूरे लगते हैं। मैंने अपने शोध के अनुसार कुछ गांव में जाकर लोगों से जब बात की तो आज भी उनकी सोच लड़कियों के प्रति वहीं पुरानी सोच को देखा। जब मैंने कुछ परिवारों में जाकर उन लड़कियों के माता पिता से उनके प्रति राय जानने की कोशिश की तो पाया कि यह ज्यादा पढ़ लिखकर क्या करेंगी? आखिर करना तो घर का

ही काम है। उनकी सोच सिर्फ पांचवीं कक्षा तक ही लड़कियों को शिक्षित करने तक विद्यालय में भेजने की अनुमति है। वह उन लड़कियों को घर संभालने चार दीवारों तक सीमित कर देना चाहते हैं। जब उनको शिक्षा के बारे में जागरूक करने की कोशिश की शिक्षा लड़कियों के लिए आज के समय में बहुत ही महत्वपूर्ण है तो भी उनके मुंह से सिर्फ एक ही बात निकली करना तो आखिर चूल्हा चोखा ही है। आज भी कुछ गांव के लोगों की सोच इतनी रूढ़िवादिता है जिनके लिए उनको जागरूक करना अत्यंत आवश्यक है। इस निरक्षरता का नकारात्मक असर सिर्फ महिलाओं के जीवन स्तर पर ही नहीं अपितु उनके परिवार और देश के आर्थिक विकास पर भी पड़ता है। एक महिला का निरक्षरता का नकारात्मक प्रभाव उसके बच्चों के स्वास्थ्य व रहन सहन पर भी पड़ता है।

स्वतन्त्रता के पूर्व बालिकाओं की शिक्षा:- आज सामान्य नारी की स्थिति क्या है? यह जानने के लिए प्राचीन काल के पन्ने पलटना अनुचित ना होगा। परिवर्तन शीलता के नैसर्गिक नियम के कारण भारतवर्ष में स्त्री की सामाजिक अवस्था सदा एक सी नहीं रहीं। प्रारम्भ में नारी को समाज में बहुत ही प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त था। मनुस्मृति में तो स्पष्ट रूप से कहा गया है कि:-"यन्त्र नारयस्तु पूज्यंते रमंते तंत्र देवता"। कई रत्नों ने वेद मन्त्रों की रचना की। नारी को समाज में नर के समान महत्व प्राप्त था। वह नर की अर्धांगिनी थी। कोई भी सामाजिक अनुष्ठान नारी के बिना पूर्ण नहीं हो पाता था। महाभारत काल तक आते आते नारी की गरीमा कुछ कम होने लगी, नारी जो पूर्वकाल में नर की सहचरी थी, अब मात्र सम्पत्ति बनकर रह गई। नारी पृथ्वी के समान समझी जाने लगी और नारी के लिए अनेक भीषण युद्ध हुए।

1. वैदिक काल में स्त्रियों को शिक्षा प्राप्त करने का पूर्ण अधिकार था। वैदिक काल में नारी शिक्षा अपने चरम उत्कर्ष पर थी। नारियों को पुरुषों के समान स्वतन्त्रता प्राप्त थी।

2. बौद्धिक काल में नारी को पुनः कुछ गौरव मिला पर वह अपनी प्रतिष्ठा हासिल ना कर सकी। मध्यकाल तक आते आते स्त्रियों की दशा बद से बदतर होती गई।

3. मुस्लिम काल में स्त्रियों की शिक्षा की कोई समुचित व्यवस्था नहीं थी। मुसलमानों में पर्दा प्रथा का प्रचलन होने के कारण अधिकांश बालिकाएं शिक्षा से वंचित रहती थी। स्त्री शिक्षा की जो व्यवस्था थी वह केवल शाही घरानों और कुलीन वर्गों की कन्याओं तथा कुछ मध्य वर्ग की मुसलमान बालिकाओं के लिए थी।

4. मुगलों के आक्रमण के कारण स्थिति और भी बिगड़ी विदेशी आक्रांताओं की पाशविक प्रवृत्तियों के भय से स्त्रियों का पठन पाठन बन्द कर दिया। बाल विवाह अनमोल विवाह सती प्रथा आदि की जंजीरों से बंधकर निरीह पशु बना दिया गया, नर और नारी के कार्य क्षेत्र में विभाजन रेखा खींच दी गई। यह माना जाने लगा कि नारी का कार्य क्षेत्र उसका घर है नारी विलास का साधन बनकर रह गई।

स्वतन्त्रता के पश्चात बालिकाओं की शिक्षा:- स्वतन्त्रता के पश्चात स्त्री शिक्षा का जो विकास हुआ है, वह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद बालिका शिक्षा की ओर हमारा दृष्टिकोण ही बदल गया। स्त्रियों को पुरुषों के समान स्तर पर लाने के लिए आवश्यक सामाजिक आर्थिक और कानूनी परिवर्तन किए गए और एक नए युग का शुभारंभ हुआ। भारत का संविधान पुरुष और नारी दोनों के लिए समान अधिकार देता है। कुछ विशेष विधान स्त्रियों के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्तर को ऊंचा उठाने के लिए है। अनुच्छेद 15 (1), 16 (1), 16 (2) में उल्लेखित है कि किसी भी नागरिक से लिंग के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाएगा। सरकार ने नारी उत्थान के लिए श्रीमती जयंती पटनायक की अध्यक्षता में नेशनल कमीशन आफ वोमेन की स्थापना की स्त्रियों के उत्थान के लिए यह कमीशन एक अच्छा अस्त्र साबित होगा, ऐसी उम्मीद की गई।

समाज में एक लड़की का आगे बढ़ना है जरूरी:- ये समाज हमारे देश में लड़कियों को आज भी हीन भावनाओं से देखता है। लड़कियों को गुलाम समझा जाता है। यदि पढ़े तो गलत वो आगे बढ़े तो गलत बस वो चार दीवारों तक ही सीमित रहे। आज भी आगे बढ़ने व पढ़ने पर रोक लगाई

जाती हैं। कम उम्र में शादी करके माता पिता अपना बोझ हल्का करना चाहते हैं। जीवन का वो दौर जो बहुत ही कठिन होता है। इसमें महिलाएं बीच मझधार में होती हैं। ना ससुराल की ना मायके की वो है तलाक। तलाक शुदा को समाज बहुत ही गलत निगाहों से देखता है। अगर पति मर जाएं तो समाज उस पर थोड़ी दया भाव कर लेता है। बार बार मन में एक ही बात आती है अब लोग क्या कहेंगे क्या सोचेंगे हमारे बारे में। गलत बात का साथ देना या चुप चाप सहन करना भी गलत है। जीवन में आगे बढ़ना है तो कलंक भी लगेगा समाज की बहुत सी बातों को सहन भी करना होगा। अनेकों कठिनाइयों का भी सामना करना होगा। माना कि आगे का सफर एक लड़की के लिए इतना आसान नहीं है पर पूरी जिंदगी घूट घूट कर जीने से अच्छा है अपनी मुसीबतों का डटकर सामना कीजिए। डरना नहीं है डरना है तो ऊपर वाले से डरना जब कुछ गलत नहीं किया तो डरना भी क्यों है? सच को सबूत की जरूरत नहीं पड़ती। अपने जीवन में आगे बढ़े और सही बात का निर्णय लीजिए। जिंदगी आपकी है फैसला भी आपका है। बालिकाओं में होने वाली शिक्षा की समस्याएं:- मेरे शोध के अनुसार बालिकाओं की शिक्षा में होने वाली अनेक समस्याएं सामने आई हैं:-

1. बालिकाओं की शिक्षा में आज के आधुनिक परिवर्तन के बावजूद भी अप्रागतिशील विचारों वाले लोग आज भी बालिकाओं में शिक्षा के महत्व को स्वीकार नहीं करते।

2. वर्तमान में आधुनिक विज्ञान का युग है। विज्ञान ने अनेक रूढ़िवादिता विचारों अंधविश्वासों और प्राचीन परंपराओं को दूर किया है किन्तु अज्ञानता के कारण कुछ लोग उसी परंपराओं व अंधविश्वास में जी रहे हैं।

3. परिवार रूढ़िवादिता पर आधारित होते हैं इसलिए परिवार में बालिकाओं का कोई भी महत्वपूर्ण स्थान नहीं होता।

4. बालिकाओं को घरेलू हिसाब किताब के लिए थोड़ा या अक्षर ज्ञान ही काफी है।

5. रूढ़िवादिता विचारों को रखने वाले अभिभावकों का मानना है कि बालिकाओं का उचित स्थान घर के अंदर है।

6. महिलाओं की स्थिति में इस क्रांतिकारी परिवर्तन के बावजूद अत्याचारों वाले पुरुष वर्ग नारी महत्ता को स्वीकार नहीं करता है।

7. भविष्य में होने वाली संतान भले ही निरक्षर रह जाएं लेकिन पुरुष नारी शिक्षा का विरोध करके अट्टहास करता है।

8. वह अपनी रूढ़िवादी धार्मिक संकीर्णता एवं नारी जाति पर शासन करने की चिरकाल से विरासत में मिलने वाली धारणा का परित्याग करने के लिए तैयार नहीं हैं। जबकि वर्तमान में आधुनिक युग विज्ञान का युग है। विज्ञान ने अनेक रूढ़िवादी विचारों, धार्मिक अन्धविश्वासों एवं प्राचीन परम्पराओं को खण्ड खण्ड करके सारहीन सिद्ध कर दिया। किन्तु अज्ञानता के कूप में पड़े हुए करोड़ों भारतीय अब भी उनसे चिपटे हुए हैं। वे भी प्राचीन विचारों एवं पोषण समर्थन करते हैं।

9. बालिका शिक्षा की एक अत्यन्त गम्भीर समस्या अपव्यय अवरोधन अधिक है पर्दा एवं बाल विवाह का प्रचलन, अन्धविश्वासों में आस्था और बालिकाओं की शिक्षा के प्रति संकुचित दृष्टिकोण के फलस्वरूप बालिकाएं अपने को विवशता से इतना उलझा हुआ पाती है कि वह बालकों के समान ज्ञान अर्जन नहीं कर पाती है।

10. यह शिक्षा ज्ञान प्रधान, पुस्तक प्रधान एवं अव्यवहारिक होने के कारण बालिकाओं में समाज की बदलती हुई परिस्थितियों से अनुकूल ना करने की सामर्थ्य का विकास नहीं करती है।

11. अध्यापिकाओं के अभाव के कारण ही बालिकाओं में शिक्षा का कम प्रसार होने के कारण शिक्षित स्त्रियों का अभाव है, जो शिक्षित भी है उनमें से अनेक की इच्छा होते हुए भी नौकरी नहीं कर पाती है, इसके कारण उनके माता पिता, पति, सास ससुर है जो कि नौकरी करवाना अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा के प्रतिकूल समझते हैं।

बालिकाओं को ऊपर उठाने व समाज में उनको बराबर का दर्जा देने के लिए सरकार ने अनेक कदम उठाए हैं:-

1. ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड
2. मध्याह्न भोजन योजना
3. स्कूल चलो अभियान
4. सर्व शिक्षा अभियान

* सभी राज्यों में कक्षा बारहवीं तक लड़कियों की शिक्षा निःशुल्क है। निः शुल्क पुस्तकें और लेखन सामग्री तथा उपस्थिति भत्ता के रूप में प्रोत्साहन प्रदान कर रहे हैं।

* सरकार ने लड़कियों की शिक्षा को ध्यान में रखते हुए विशेष पाठ्यक्रम लागू किए गए हैं।

* लड़कियों के लिए अलग से विद्यालय खोले गए हैं जिससे उनको विद्यालय में उनको विद्यालय में आने में संकोच न हो विशेष रूप से अध्यापिकाओं को रखा गया है जिससे उनमें होने वाली समस्या को दूर किया जा सके।

* सरकार ने विद्यालयों में यातायात की सुविधा प्रदान की गई है। जिससे लड़कियों को आने जाने में किसी प्रकार की समस्याओं का सामना ना करना पड़ा।

सभी के लिए शिक्षा:-

1. वर्तमान समय में भारत की प्रारम्भिक शिक्षा व्यवस्था विश्व की सबसे बड़ी शिक्षा अवस्थाओं में से एक है। देश में साक्षरता स्तर को सुधारने के लिए शिक्षा का लक्ष्य रखा गया। इसके अन्तर्गत 6-14 आयुवर्ग के बच्चों तथा 15-35 आयुवर्ग के प्रोढ़ों को शामिल किया गया। जबकि सार्वभौमिक शिक्षित करना है। इसमें 60 प्रतिशत लड़कियां होंगी और साथ ही 15 से 35 आयु वर्ग के लगभग 122 मिलियन प्रोढ़ों को साक्षर करने का लक्ष्य है जिसमें 62 प्रतिशत महिलाएं होंगी।

सारांश:- जब सरकार प्रयास कर रही है तो क्या हमारा इतना भी फर्ज नहीं है इन बालिकाओं को विद्यालयों तक भेजें। जब सरकार इतने कदम उठा रही हैं तो एक कदम बढ़ाना हमारा भी फर्ज है। यदि अपनी सोच को नहीं बदलता तो हमारा समाज आगे कैसे बढ़ेगा। यदि हम अपने देश की खुशहाली व प्रगतिशील होते देखना चाहते हैं तो देश की प्रत्येक बालिकाओं को शिक्षित होना ही होगा क्योंकि जब एक शिक्षित महिला अपने पूरे परिवार को चला सकती है तो प्रत्येक शिक्षित महिलाएं देश को कितना अग्रसर कर सकती है। बालिकाओं को भी उतना ही समाज में सम्मान व दर्जा दे जितना बालकों को दिया जाता है। दुनिया की परवाह करने वाला मनुष्य कभी सफल नहीं हो सकता। बालिकाओं को भी दुनिया की परवाह किए बिना आगे बढ़ाए और होने वाले अत्याचारों का विरोध कर सभी सामाजिक बुराइयों का अंत करना चाहिए, ताकि एक उत्तम समाज का निर्माण हो सके। (डॉ. श्वेता सिंह पानीपत)

सन्दर्भ :-

1. हरीश नामदेव :- नाला पटरी, दयानंद नगर, शामली

2. अग्रवाल, डॉ. वी. पी. :- राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में भारत वर्ष में आधुनिक शिक्षा का आलोचनात्मक अध्ययन अनु बुक्स शिवाजी रोड, मेरठ
3. ओढ़ लक्ष्मीलाल के. :- शिक्षा के नूतन आयाम राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
4. इन्द्रा :- स्टेट्स आफ वूमैन इन एंशियंट इंडिया मोतीलाल बनारसी दास पब्लिशर्स, बनारस
5. कौर राजकुमार अमृत:- द वूमैन नवजीवन पब्लिशर्स हाऊस, अहमदाबाद
6. कोवन मीना जी:- एजुकेशन आफ वूमैन इन इंडिया ओलीफेनट एनसरन एण्ड फेरियर लन्दन-1912